THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
Popular Article
June, 2026 Vol.6(6), 1612-1616

समाज में जाती एवं समाजिकता

सौरभ श्रीवास्तव
कनिष्ठ संकाय , एफ.डी.डी.आई नोएडा
doi.org/10.5281/ScienceWorld.20629852

भारत आज विश्व में सबसे जड़े आबादी वाला सबसे जड़े धर्म ,जाती ,समूह ,समुदायो ,बोली ,रहनसहन वाला देश है । यहा पग-पग पर भारतीय अपने आप को विशेष जाती के रूप में बताना भारतीय बताने से जादा अच्छा और गौरानवित समझते है । जाती उनका मुख्य पहचान है ,जो उनके कार्य ,धर्म ,कर्म को बताती है । परंतु मानव जन्म के लाखो वर्ष पूर्व से जब पृथ्वी आग का गोला थी एवं धीरे –धीरे अपने परिवर्तन से बादल रही थी वह से लेके अज्ज मानव के आधुनिक युग तक बहुत से परिवर्तन की साक्ष्य है। शुरवात में न कोई जाती थी न कोई धर्म केवल एक ही कर्म एवं एक ही धर्म का प्रचलन था वह था जीवन को चलाना एवं जीवन जीना जिसके लिए मानव जघ –जघ भटकता खाने की तलाश करता एवं जीवन व्यतीत करता था । अफ्रीका में मानव का प्रथम साक्ष्य प्रपट हुआ मानव बंजारे जीवन या आदिमनव जीवन से बढ़ते हुवे जीवन की खोज में आगे बढ़ता गया पहिये, आग, खाना, खेती, पशुपालन की ओर बढ़ते हुवे जीवन को समझने एवं खुद की समझ बढ़ाने निकला। तब न कोई जाती थी न ही कोई धर्म था यह विश्व के हर स्तहन में जीवन के पनपने एवं मानव के विकसित होने का चरण था जो सभी जगहज एक जैसा ही था ।

मानव के विकास और जीवन की उत्पत्ति का इतिहास करोड़ों वर्ष पुराना है। पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत जल से हुई, जो क्रमिक विकास (Evolution) के माध्यम से स्तनधारियों और अंततः आदिमानव तक पहुँची। मानव का उद्भव मुख्य रूप से अफ्रीका के जंगलों में प्राइमेट्स (नर-वानर) से हुआ।

महासागरीय जीवन: लगभग \(3.5\) से \(4\) अरब वर्ष पूर्व पृथ्वी के गर्म समुद्रों में जीवन की पहली चिंगारी (एक-कोशिकीय जीव या बैक्टीरिया के रूप में) फूटी।

बहु-कोशिकीय जीव: धीरे-धीरे जल से निकलकर जीवन जमीन पर आया और क्रमिक विकास

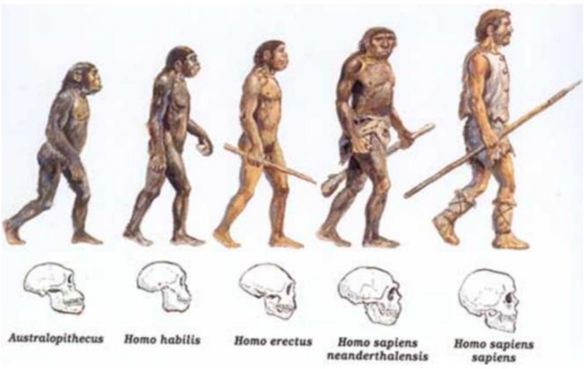

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 10/06/2026

(Evolution) के सिद्धांत के अनुसार जलचर, उभयचर, रेंगने वाले जीव (सरीसृप) और अंततः स्तनधारी (Mammals) अस्तित्व में आए।

ड्रायोपिथेकस और रामापिथेकस (लगभग 1.5 - 2.5 करोड़ वर्ष पूर्व): ये वानरों जैसे दिखते थे। ड्रायोपिथेकस पेड़ों पर रहते थे, जबकि रामापिथेकस जमीन पर रहने लगे थे।

ऑस्ट्रेलोपिथेकस (लगभग 40 - 50 लाख वर्ष पूर्व): इन्होंने सबसे पहले दोनों पैरों पर सीधे खड़े होकर चलना सीखा। इनका दिमाग छोटा और जबड़े बड़े थे, और ये पत्थरों के हथियारों का इस्तेमाल करने लगे थे।

निएंडरथल मानव (लगभग 3 लाख वर्ष पूर्व): ये काफी हद तक आधुनिक मानव जैसे दिखते थे। ये मृतकों को दफनाना और कपड़े पहनना जानते थे।

होमो सेपियंस (लगभग 3 लाख से 2 लाख वर्ष पूर्व): ये आधुनिक मानव (बुद्धिमान मानव) हैं। इनका जन्म अफ्रीका में हुआ। इन्होंने भाषा, कला, कृषि और आधुनिक सभ्यता की शुरुआत की।

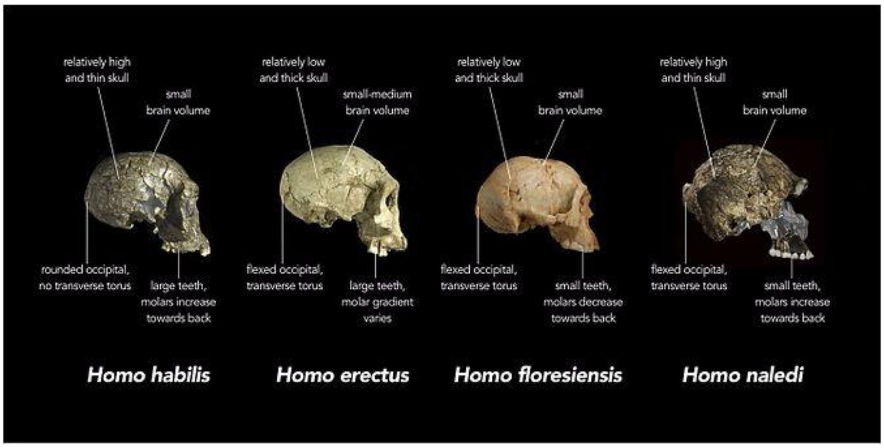

जाति' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की जनश् धतु से मानी जाती हैए जिसका अर्थए प्रजातिए जन्म अथवा भेद से लिया जा सकता है। अंग्रेजी में जाति के लिए कास्टश् शब्द का व्यवहार किया जाता है। यह कास्ट शब्द पुर्तगाली शब्द कास्टा से बना है जिसका अर्थ नस्लए प्रजाति और जन्म है। इसके साथ हीं कास्टश् को लैटिन शब्द कास्टसश् से भी व्युत्पन्न हुआ बताया जाता है। वस्तुतः इसका संबंध् प्रजातीय अथवा जन्मगत आधर पर स्थित व्यवस्था से माना जा सकता है। आध्ुनिक समाजशास्त्रिायों ने भारतीय जाति-प्रथा पर विभिन्न दृष्टियों से विचार किया है तथा यह बताया है कि जाति-प्रथा जन्म से प्रभावित और वर्गगत ढ़ाचे पर आधरित ऐसी प्रथा है जिसमें आव(ता भी है और गतिशीलता भी है। भारतीय समाज की जाति व्यवस्था परम्परागत रूप मंे वंशानुगत होती चली गई। जो विभिन्न विचारों के साथ परस्पर विरोध्ी अनेक गुटों में विभाजित होकर वंशानुगत होती गई। और संस्तरणे के आधर पर क्रमागत बन गई। इसमें रक्त संकरता अज्ञैर व्यवसाय परिवर्तन नहीं गृहीत किये जाते। साथ हीं इसमें नये सदस्यों को भी नहीं स्वीकार किया जाता।3 इस स्वरूप के अन्तर्गत जाति-प्रथा के तीन प्रमुख तत्वों का दिग्दर्शन होता है पहला तो यह है कि जाति व्यवस्था के विभिन्न जातियाँ एक दूसरे का विरोध्ी होती है। जिसके कारण वे अलग-अलग बनी रहती है। दूसरा यह कि इसमें जन्म को प्रधनता देते हुए व्यवसायए रक्तए विवाह आदि की अपनी विशेषता परिलक्षित की जाती है जिससे प्रत्येक जाति एक दूसरे से पृथक रहती है। तीसरा यह कि ये जातियाँ से ग्रस्त रहती है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 10/06/2026

मानव क्रमिक विकास के पश्चात मानव को मानव की ही कुंठित बुद्धि ने ग्रसित किया ,मानव-मानव के बीच मे आपसी भेद शुरू हुआ पौरव में कर्म से जाने जाना वाला मनमाव अब वर्ण से जाने जाने लगा ऊंजके 4 वर्ण जिसमे ब्राह्मण , क्षत्रिय ,वैश्य ,शूद्र और इनमे भी केवा तीन वर्णो को ही प्रमुखता मिली यह कुंठित छीजे केवल पूर्व में ही नहीं बल्कि आज के मानव में भी पूरी तरह से बैठा हुआ है । पूर्व से चलता हुआ आजादी के समय तक इसकी लड़ाई चलती रही हमने केवल आजादी ही पायी पर जाती के रूप में और भेदभाव में विजय और आजादी हमे आज भी प्राप्त नहीं हुई ।

बाबा साहब अंबेडकर के इतनी विशाल जन युद्ध के बाद भी एवं विश्व के सबसे बड़े संविधान के बाद भी हम आज भी कुंठित होके बैठे है मानव आज अपने कर्म एवं अच्छे कार्यो से बाद में पहले केवल जाती से जाना जाता है ।

गुप्त काल से पूर्व तक हम जाती के ऊपर विचार नहीं करते थे हम भगवान में विश्वास तो करते थे परंतु कुंठित नहीं थे ।

वेदो के समय भी जाती का अर्थ केवल जाती मात्र से नहीं था । कोई भी अपने कर्म के आधार पर अपने वर्ण बादल सकता था परंतु आज का कुंठित मानव अपने वर्ण को ही अपना मान बैठा अर्थात अपने जन्म अधार पर स्वयं को श्रेष्ठ मान बैठा है ।

Caste system in 19th century India

Pages from *Seventy-two Specimens of Castes in India* according to Christian Missionaries in February 1837. They include Hindu, Muslim, Sikh and Arabs as castes of India.

हमारे वेदो में उल्लेख है....

- सनातन धर्म में वेदों का निर्माण किसी मानव द्वारा नहीं, बल्कि इन्हें **अपौरुषेय** (अलौकिक एवं अनादि) माना जाता है। मूल रूप से एक विशाल वेद था, जिसे द्वापर युग में महर्षि **वेदव्यास** जी ने चार भागों—**ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद**—में विभाजित किया।
- **कुल (गोत्र और वंश) की उत्पत्ति**

  वैदिक समाज **पितृसत्तात्मक** था। ऋषियों और उनके वंशजों (कुल) के आधार पर ही वेदों के मंत्रों का संरक्षण और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक प्रसारण हुआ। इसी से **गोत्र प्रणाली** (ऋषि के नाम पर आधारित कुल) का विकास हुआ, जो विवाह और पारिवारिक पहचान का मुख्य आधार बनी।
- **जाति (वर्ण व्यवस्था) का विभाजन**

  वेदों में 'जाति' शब्द का उल्लेख नहीं है, बल्कि समाज **'वर्ण व्यवस्था'** (चार वर्णों) में विभाजित था जिसका वर्णन ऋग्वेद के दसवें मंडल के **पुरुष सूक्त** में मिलता है ।
- **ब्राह्मण**: विराट पुरुष के मुख से उत्पन्न (ज्ञान और शिक्षा का कार्य)।
- **क्षत्रिय**: भुजाओं से उत्पन्न (रक्षा और शासन)।
- **वैश्य**: जंघा (जांघों) से उत्पन्न (कृषि और व्यापार)।
- **शूद्र**: चरणों से उत्पन्न (सेवा और श्रम)।

प्रारंभिक वैदिक काल बनाम आज की जाति प्रथा

प्रारंभिक वैदिक काल में यह विभाजन **कर्म और योग्यता** पर आधारित था, जन्म पर नहीं। कोई भी व्यक्ति अपनी रुचि और कर्म बदलकर वर्ण चुन सकता था। बाद के उत्तर-वैदिक काल और मध्यकाल

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 10/06/2026

में यह व्यवस्था **जन्म आधारित** हो गई और इसमें कठोरता तथा छुआछूत जैसी कुरीतियां जुड़ गईं। वेदों के अनुसार व्यक्ति अपने कर्मों से महान बनता है, जन्म से नहीं।

- मनुष्यो में कितनी जाती है ?

  समाधान केवल एक जाती मनुष्य

- वर्ण विभाजन का वास्तविक आधार क्या है ?

कर्म के अनुसार समाज में दायित्व का बटवारा जैसे – कोई भी व्यक्ति जन्म से कलाकार या डॉक्टर नहीं होता वह जन्म के बाद अपने कर्म से उस स्थान पर पहुँच पता है वर्ण यही बताता है । जाती के आधार पर जाती को बटने का कार्य वर्ण नहीं बताता इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं है ।

- **ब्राह्मण जन्म से होता है या कर्म से ?**

मनु कहते है बिना शिक्षा के कोई भी ब्राह्मण नहीं है ।

> *जैसे लकड़ी का हाथी या चमड़े का हरिण केवल नाममात्र के होते हैं, वैसे ही अपढ़ ब्राह्मण नाम का ही ब्राह्मण होता है।*
> (मनुस्मृति 2/157)

> *वेदाध्ययन की दीक्षा से ही शिष्य का वास्तविक जन्म माना जाता था।*
> (मनुस्मृति 2/148)

> *माता-पिता से उत्पन्न संतति का जन्म सामान्य जन्म है। वास्तविक जन्म तो शिक्षा प्राप्ति के उपरांत ही होता है।*
> (मनुस्मृति 2/147)

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 10/06/2026

> ❝ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य — ये तीनों वर्ण विद्या के अध्ययन से द्विज (दूसरा जन्म प्राप्त) होते हैं। स्वेच्छा, आलस्य से अथवा किसी विशेष कारण से विद्या से वंचित रह जाने के कारण शूद्र का दूसरा जन्म नहीं माना जाता क्योंकि उसमें विद्या दीक्षा नहीं होती ।
> (मनुस्मृति 10/4)
>
> ❝ ब्राह्मण शूद्र बन सकता है और शूद्र ब्राह्मण हो सकता है।
> (मनुस्मृति 10/64)

अर्थात मानव ही मानव समाज को कुंठित कर अपने ज्ञान का गलत प्रयोग कर मानव जो एक मात्र जाती है उसे नष्ट कर रहा है ।

जाती विभाजन के नाम पर अंतर जाती विवाह को रोकना ,स्वयं खुद को ऊपर रख स्वयं के संतान को त्याग देना एवं यह दिखाना की वो धर्म और कर्म के सबसे बड़े ज्ञाता है । यह यही बतलाता है की समाज में बैठे लोग ने समाज की परिभाषा एवं वेदो की परिभाषा स्वयं निर्धारित करके रख ली है । हर किसी ने किसी ना किसी ऐसे व्यक्ति से अपना संबंध जोड़ रखा है जो ना केवल हमे भ्रमित करता है बल्कि हमे सही धर्म करने एवं सही वर्ण की प्राप्ति करने से भी रोकता है ।

ऊपर मनुस्मृति में लिखा हुआ साक्ष्य भी संलग्न है की शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र अर्थात कर्म बड़ा है । कर्म ही हमारे सभी के वर्ण का निर्धारण करता है। रटी हुई छीजे और अधूरी जानकारी से समाज में केवा घृणा का भाव ही उत्पन्न हो सकता है ।

मनुष्य जाती में होने के लिए हमे सबसे पहले मनुष्य बनने की जरूरत है ,किसी जाती समुदाय में जुड़ने की नहीं ।

https://vediksanatangyan.com/vaidik-shaastron-mein-varn-aur-jaati-bhraantiyaan-aur-samaadhaan/
https://youtu.be/kEOhDh5yc7Q?si=Gzi37oqyxHX-HHwL
https://courses.lumenlearning.com/suny-hccc-worldcivilization/chapter/the-evolution-of-humans/
https://rjhssonline.com/HTMLPaper.aspx?Journal=Research%20Journal%20of%20Humanities%20and%20Social%20Sciences;PID=2014-5-1-2
https://en.wikipedia.org/wiki/Human_history

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 10/06/2026